

सामाजिक जीवन में क्रोध की जरूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों की चिरनिवृत्ति का उपाय ही न कर सके। कोई मनुष्य किसी दुष्ट के नित्य दो-चार प्रहार सहता है। यदि उसमें क्रोध का विकास नहीं हुआ है तो वह केवल आह-उह करेगा जिसका उस दुष्ट पर कोई प्रभाव नहीं। उस दृष्ट के हृदय में विवेक, दया आदि उत्पन्न करने में बहुत समय लगेगा। संसार किसी को इतना समय ऐसे छोटे-छोटे कामों के लिए नहीं दे सकता। भयभीत होकर प्राणी अपनी रक्षा कभी-कभी कर लेता है; पर समाज में इस प्रकार प्राप्त दुःखनिवृत्ति चिरस्थायिनी नहीं होती। हमारे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि क्रोध करने वाले के मन में सदा भावी कष्ट से बचने का उद्देश्य रहा करता है। कहने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि चेतना सृष्टि के भीतर क्रोध का विधान इसीलिए है।

जिससे एक बार दुःख पहुँचा, पर उसके दुहराए जाने की संभावना कुछ भी नहीं है, जो कष्ट पहुँचाया जाता है वह प्रतिकार मात्र है; उसमें रक्षा की भावना कुछ भी नहीं रहती। अधिकतर क्रोध इसी रूप में देखा जाता है। एक दूसरे से अपरिचित दो आदमी रेल में चले जा रहे हैं। इनमें से एक को आगे ही के स्टेशन पर उतरना है। स्टेशन तक पहुँचते-पहुँचते बात ही बात में एक ने दूसरे को एक तमाचा जड़ दिया और उतरने की तैयारी करने लगा। अब दूसरा मनुष्य भी यदि उतरते-उतरते उसे एक तमाचा लगा दे तो यह उसका बदला या प्रतिकार ही कहा जाएगा क्योंकि उसे फिर उसी व्यक्ति से तमाचे खाने का कुछ भी निश्चय नहीं था। जहाँ और दुःख पहुँचाने की कुछ भी संभावना होगी, वहाँ शुद्ध प्रतिकार न होगा, उसमें स्वरक्षा की भावना भी मिली होगी।

हमारा पड़ोसी कई दिनों से नित्य आकर हमें दो चार टेढ़ी-सीधी सुना जाता है, यदि हम एक दिन उसे पकड़कर पीट दें तो हमारा यह कर्म शुद्ध प्रतिकार न कहलाएगा, क्योंकि हमारी दृष्टि नित्य गालियाँ सहने के दुःख से बचने के परिणाम की ओर भी समझी जाएगी। इन दोनों दृष्टान्तों को ध्यानपूर्वक देखने से पता लगेगा कि दुःख से उद्विग्न होकर दुःखदाता को कष्ट पहुँचाने की प्रवृत्ति दोनों में है; पर एक में वह परिणाम आदि का विचार बिलकुल छोड़े हुए है और दूसरे में कुछ, लिए हुए। इनमें से पहले दृष्टान्त का क्रोध उपयोगी नहीं दिखाई पड़ता। पर क्रोध करने वाले के पक्ष में उसका उपयोग चाहे न हो पर लोक के भीतर वह बिलकुल खाली नहीं जाता। दुःख पहुँचाने वाले से हमें फिर दुःख पहुँचने का डर न सही, पर

परिचय

जन्म : ४ अक्टूबर १८८४ अगौना, बस्ती (उ.प्र.)

मृत्यु : २ फरवरी १९४१ वाराणसी (उ.प्र.)

परिचय : आप हिंदी साहित्य के कीर्ति स्तंभ हैं। हिंदी में वैज्ञानिक आलोचना का सूत्रपात आपके ही द्वारा हुआ है। आप श्रेष्ठ और मौलिक निबंधकार थे। आपने सरल के साथ-साथ परिमार्जित भाषा में पूर्ण अधिकार के साथ लिखा है। व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण निर्दोष भाषा आपकी विशेषता है।

प्रमुख कृतियाँ : विचार वीथी, चिंतामणि भाग १, २, ३ (निबंध संग्रह), रस मीमांसा, त्रिवेणी, सूरदास (आलोचना) जायसी ग्रंथावली, तुलसी ग्रंथावली आदि (संपादन) हिंदी साहित्य का इतिहास (ऐतिहासिक ग्रंथ) शशांक (अनुवादित उपन्यास) विश्व प्रपंच, आदर्श जीवन, मेगास्थानीज का भारतवर्षीय वर्णन आदि (अंग्रेजी से अनुवादित)

गद्य संबंधी

मनोवैज्ञानिक निबंध : यह गद्य लेखन की विशेष विधा है। किसी विषय वस्तु से संबंधित ज्ञान को क्रमबद्ध रूप से बाँधते हुए लेखन करना निबंध है। विचारपूर्वक क्रमबद्ध रूप से लिखी गई रचना निबंध है।

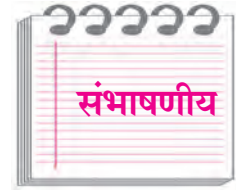
प्रस्तुत निबंध में शुक्ल जी ने क्रोध, वैर, चिड़चिड़ाहट आदि भावों का मनोवैज्ञानिक विवेचन किया है।

समाज को तो है। इससे उसे उचित दंड दे देने से पहले तो उसी की शिक्षा या भलाई हो जाती है फिर समाज के और लोगों के बचाव का बीज भी बो दिया जाता है। यहाँ पर भी वही बात है कि क्रोध के समय लोगों के मन में लोककल्याण की यह व्यापक भावना सदा नहीं रहा करती। अधिकतर तो क्रोध प्रतिकार के रूप में ही होता है।

क्रोध की उग्र चेष्टाओं का लक्ष्य हानि या पीड़ा पहुँचाने के पहले आलंबन में भय का संचार करना रहता है। जिस पर क्रोध प्रकट किया जाता है वह यदि डर जाता है और नम्र होकर पश्चात्ताप करता है तो क्षमा का अवसर सामने आता है। क्रोध का गर्जन-तर्जन क्रोधपात्र के लिए भावी दुष्परिणाम की सूचना है, जिससे कभी-कभी उद्देश्य की पूर्ति हो जाती है और दुष्परिणाम की नौबत नहीं आती। एक की उग्र आकृति देख दूसरा किसी अनिष्ट व्यापार से विरत हो जाता है या नम्र होकर पूर्वकृत दुर्व्यवहार के लिए क्षमा चाहता है। बहुत से स्थलों पर क्रोध पर क्रोध का लक्ष्य किसी का गर्व चूर करना मात्र रहता है अर्थात् दुख का विषय केवल दूसरे का गर्व या अहंकार होता है। अभिमान दूसरों के मन में या उसकी भावना में बाधा डालता है उससे वह बहुत से लोगों को यों ही खटका करता है। लोग जिस तरह हो सके-अपराध द्वारा, अभिमानी को नम्र करना चाहते हैं। अभिमान पर जो रोष होता है उसकी प्रवृत्ति, अभिमानी को केवल नम्र करने की रहती है उसका हानि या पीड़ा पहुँचाने का उद्देश्य नहीं होता। संसार में बहुत से अभिमान का उपचार अपमान द्वारा ही हो जाता है।

क्रोध का वेग इतना प्रबल होता है कि कभी-कभी मनुष्य यह भी विचार नहीं करता कि जिसने दुख पहुँचाया है, उसमें दुख पहुँचाने की इच्छा थी या नहीं। इसी से कभी तो यह अचानक पैर कुचल जाने पर किसी को मार बैठता है और कभी ठोकर खाकर कंकड़-पत्थर तोड़ने लगता है। यात्रियों ने बहुत से ऐसे जंगलियों का हाल लिखा है जो रास्ते में पत्थर की ठोकर लगने पर बिना उसको चूर-चूर किए आगे नहीं बढ़ते। अधिक अभ्यास के कारण यदि कोई मनोविकार बहुत प्रबल पड़ जाता है, तो वह अंतःप्रकृति में व्यवस्था उत्पन्न कर मनुष्य को बचपन से मिलती जुलती अव्यवस्था में ले जाकर पटक देता है।

क्रोध शांति भंग करने वाला मनोविकार है। एक का क्रोध दूसरे में भी क्रोध का संचार करता है। जिसके प्रति क्रोध प्रदर्शन होता है वह तत्काल अपमान का अनुभव करता है और इस दुख पर उसकी भी त्योरी चढ़ जाती है। यह विचार करने वाले बहुत थोड़े निकलते हैं कि हम पर जो क्रोध प्रकट किया जा रहा है, वह उचित है या अनुचित। इसी से धर्म, नीति और शिष्टाचार तीनों में क्रोध के निरोध का उपदेश पाया जाता है। संत लोग तो खलों के वचन सहते ही हैं, दुनियादार लोग भी न जाने



संत समर्थ रामदास जी द्वारा लिखित मन को उपदेश देने वाले 'मनाचे श्लोक' सुनिए और उसका आशय बताइए।



‘संत-महात्माओं की रचनाएँ समाज का प्रबोधन करने में सक्षम होती हैं’, इस विषय के प्रमुख मुद्दे सुनाइए।



‘क्षमाशीलता दुर्बलता नहीं’, इस विचार पर टिप्पणी तैयार कीजिए।

कितनी ऊँची-नीची पचाते रहते हैं। सभ्यता के व्यवहार में भी क्रोध के चिह्न दबाए जाते हैं। इस प्रकार का प्रतिबंध समाज की सुख-शांति के लिए बहुत आवश्यक है। पर इस प्रतिबंध की भी सीमा है। यह परपीड़कोन्मुख क्रोध तक नहीं पहुँचता।

क्रोध के प्रेरक को दो प्रकार के दुख हो सकते हैं, अपना दुख और पराया दुख। जिस क्रोध के त्याग का उपदेश दिया जाता है वह पहले प्रकार के दुख से उत्पन्न क्रोध है। दूसरे के दुख पर उत्पन्न क्रोध बुराई की हद के बाहर समझा जाता है। क्रोधोत्तेजक दुख जितना ही अपने संपर्क से दूर होगा, उतना ही लोक में क्रोध का स्वरूप सुंदर और मनोहर दिखाई देगा। दुख से आगे बढ़ने पर भी कुछ दूर तक क्रोध का कारण थोड़ा बहुत अपना ही दुख कहा जा सकता है; जैसे, अपने या आत्मीय परिजन का दुख, इष्ट-मित्र का दुख। इसके आगे भी जहाँ तक दुख की भावना के साथ कुछ ऐसी विशेषता लगी रहेगी कि जिसे कष्ट पहुँचाया जा रहा है वह हमारे ग्राम, पुर, देश का रहने वाला है, वहाँ तक हमारे क्रोध से सौंदर्य की पूर्णता में कुछ, कसर रहेगी। जहाँ उक्त भावना निर्विशेष रहेगी वहीं सच्ची परदुःखकातरता मानी जाएगी।

बहुत दूर तक और बहुत काल से पीड़ा पहुँचाते चले आते हुए किसी घोर अत्याचारी का बना रहना ही लोक की क्षमा की सीमा है। इनके आगे क्षमा न दिखाई देगी-नैराश्य, कायरता और शिथिलता ही छाई दिखाई पड़ेगी। ऐसी गहरी उदासी की छाया के बीच आशा, उत्साह और तत्परता की प्रभा जिस क्रोधनि के साथ फूटती दिखाई, पड़ेगी उसके सौंदर्य का अनुभव सारा लोक करेगा।

वैर क्रोध का प्रचार या मुरब्बा है। जिससे हमें दुख पहुँचा है उस पर यदि हमने क्रोध किया और यह क्रोध हमारे हृदय में बहुत दिनों तक टिका रहा तो वह वैर कहलाता है। इस स्थायी रूप में टिक जाने के कारण क्रोध का वेग और उग्रता तो धीमी पड़ जाती है; पर लक्ष्य को पीड़ित करने की प्रेरणा बराबर बहुत काल तक हुआ करती है। क्रोध अपना बचाव करते हुए शत्रु को पीड़ित करने की युक्ति आदि सोचने का समय प्रायः नहीं देता, पर वैर उसके लिए बहुत समय देता है। पूछिए तो क्रोध और वैर का भेद केवल कालकृत है। दुख पहुँचाने के साथ ही दुःखदाता को पीड़ित करने की प्रेरणा करने वाला मनोविकार क्रोध और कुछ काल बीत जाने पर प्रेरणा करने वाला भाव वैर है। किसी ने आपको गाली दी यदि आपने उसी समय उसे मार दिया तो आपने क्रोध किया। मान लीजिए कि वह गाली देकर भाग गया और दो महीने बाद आपको कहीं मिला। अब यदि आपने उससे बिना फिर गाली सुने मिलने के साथ ही उसे मार दिया तो यह आपका वैर निकालना हुआ। इस विवरण से स्पष्ट है कि वैर उन्हीं प्राणियों में होता है जिनमें



आपके परिवेश में जो 'हास्य क्लब' चलाया जाता है, उसकी जानकारी लेकर उससे होने वाले लाभ पर टिप्पणी लिखिए।



'मन, वाणी, व्यवहारों में संयम ये मानवता के सोपान हैं' इसपर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

धारणा अर्थात भावों के संचय की शक्ति होती है। पशु और बच्चे किसी से वैर नहीं मानते। चूहे और बिल्ली के संबंध का 'वैर' नाम आलंकारिक है। आदमी का न आम-अंगूर से कुछ वैर है न भेड़-बकरे से। पशु और बच्चों दोनों क्रोध करते हैं और थोड़ी देर के बाद भूल जाते हैं।

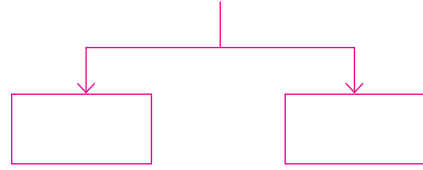
* क्रोध का एक हल्का रूप है चिड़चिड़ाहट, जिसकी व्यंजना प्रायः शब्दों ही तक रहती है। इसका कारण भी वैसा उग्र नहीं होता। कभी-कभी चित्त व्यग्र रहने, किसी प्रवृत्ति में बाधा पड़ने या किसी बात का ठीक सुभीता न बैठने के कारण ही लोग चिड़चिड़ा उठते हैं। ऐसे सामान्य कारणों के अवसर बहुत अधिक आते रहते हैं इससे चिड़चिड़ाहट स्वभावगत होने की संभावना बहुत अधिक रहती है। किसी मत, संप्रदाय या संस्था के भीतर निरूपित आदर्शों पर ही अनन्य दृष्टि रखने वाले बाहर की दुनिया देख-देखकर अपने जीवन भर चिड़चिड़ाते चले जाते हैं। जिधर निकलते हैं, रास्ते भर मुँह बिगड़ा रहता है। चिड़चिड़ाहट एक प्रकार की मानसिक दुर्बलता है, इसी से रोगियों और बुढ़ों में अधिक पाई जाती है। इसका स्वरूप उग्र और भयंकर न होने से यह बहुतों के-विशेषतः बालकों के-विनोद की एक सामग्री भी हो जाती है। बालकों को चिड़चिड़े बुढ़ों को चिढ़ाने में बहुत आनंद आता है और कुछ विनोदी बुढ़ों भी चिढ़ने की नकल किया करते हैं। *

—०—

(‘चिंतामणि’ से)

* कृति कीजिए :-

(१) चिड़चिड़ाहट के कारण



(२) एक शब्द में उत्तर लिखिए :-

(अ) क्रोध का एक हल्का रूप

=

(ब) बच्चों को इन्हें चिढ़ाने में आनंद आता है

=

शब्द संसार

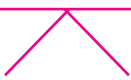
क्रोध (पुं.सं.) = रोष, गुस्सा
गर्जन (पुं.सं.) = गरजना
तर्जन (पुं.सं.) = बिगड़ना, डाँटना
त्योरी (स्त्री.सं.) = दृष्टि, निगाह
निर्विशेष (क्रि.वि.) = एकटक
परदुःखकातरता (भा.सं.) = दूसरों के दुख से होने वाला दुख

पाठ के आँगन में

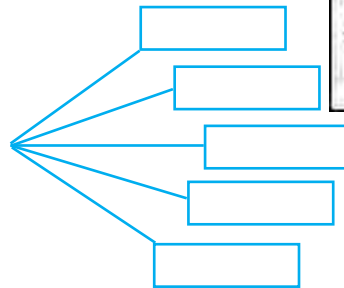
(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) उत्तर लिखिए :

१. क्रोध के प्रेरक प्रकार



२. क्रोध के रूप



(२) क्रोध मनुष्य का मानसिक स्वास्थ्य बिगाड़ता है, इस बारे में अपने विचार लिखिए।



चरित्र समृद्ध बनाने के लिए जिन गुणों की आवश्यकता है, उनकी सूची बनाइए।



.....

.....

.....

(१) 'शिक्षक दिवस' पर उत्कृष्ट कार्य हेतु विद्यालय द्वारा शिक्षक को सम्मानपत्र देकर उनका अभिनंदन किया जा रहा है। इस सम्मानपत्र से अव्यय ढूँढ़कर उनसे अन्य वाक्य बनाइए :-

सम्मानपत्र

श्री/श्रीमती.

विद्यालय का नाम :

पता : -

सम्माननीय,

आज डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्म दिन 'शिक्षक दिवस' पर आयोजित अभिनंदन समारोह में हम आपको अपने बीच पाकर हर्षित व गौरवान्वित हैं।

आपके मार्गदर्शन में प्राप्त उपलब्धियों पर संपूर्ण विद्यालय, परिवेश व समाज को गर्व है। आपने न केवल विद्यार्थियों की बहुमुखी प्रतिभा और असाधारण योग्यता को उभारा वरन प्रेरणाप्रद सफलता भी दिलवाई। आपके इस कार्य तथा आपके अन्य अति विशिष्ट कार्यों के लिए विद्यालय आप का अभिनंदन करते हुए गर्व का अनुभव करता। आपके सहयोग से विद्यालय का विकास अक्षुण्ण होता रहा है।

हे ! गुरुवर्य, आप सदैव स्वस्थ-संपन्न रहें एवं दीर्घायु हों, ऐसी हम सबकी आत्मिक कामना है।

अनंत हार्दिक शुभकामनाओं सहित ...

दिनांक :- ५ सितंबर २०१७

शिक्षक दिवस

स्थान :- विद्यालय सभागार

समय :- प्रातः १०:३० बजे

विद्यालय प्रमुख

क, ख, ग

(२) निर्देशानुसार अव्यय परिवर्तित करके लिखिए :-

क्र.	अव्यय भेद	अव्यय शब्द	अन्य वाक्य
१.	क्रिया विशेषण		
२.	संबंध बोधक		
३.	समुच्चय बोधक		
४.	विस्मयादि बोधक वाचक		